अध्यक्ष महोदय : मैंने आपकी बात सुन ली है । 377 में एलाऊ कर दिया है।

श्री हरीश कुमार गंगवार (पीलीभीत) : अध्यक्ष महोदय, . . . (**व्यवधान**) . . .

MR. SPEAKER: यह क्या है? What is he doing? Mr. Chandra Pal Shailani.

(*Interruptions*)

श्री हरीश कुमार गंगवार : मेरी बात भी सुन लीजिए ।

MR. SPEAKER: Why do you want to take away my time unnecessarily? When I assure you that it is under my consideration, why don't you believe me? Do you want publicity? I won't go back upon my words.

(**व्यवधान**) . .

Now, Matters under 377. Shri Shailani.

12.12 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) NEED FOR INQUIRY INTO REMOVAL OF "CHAVAR" FROM THE STATUE OF LORD BUDDHA IN KUSHINAGAR DISTRICT DEORIA U.P.

श्री चन्द्रपाल शैलानी (हाथरस) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार का ध्यान बोद्ध तीर्थ कुशी नगर जिला देवरिया, उत्तर प्रदेश में पुरातत्व विभाग के कर्मचारियों द्वारा भगवान बुद्ध की मूर्ति के ऊपर से चीवर उतार देने, देश विदेश के बौद्ध-भिक्षुओं व उपासकों के प्रति अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने तथा उन्हें पूजा एवं वन्दना न करने देने की ओर आकर्षित करना चाहता हूं । श्रीमन कुशीनगर एक विश्वविख्यात महान बौद्ध तीर्थ स्थान है जंहा भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था और इस स्थान पर हजारों की संख्या में प्रति वर्ष विदेशों से बौद्ध तीर्थ यात्री दर्शनार्थ आते हैं । भारत सरकार ने भी लाखों रुपये खर्च करके इस स्थान का पुनरूद्धार किया और रमणीक बनाया है । मान्यवर, मैं यह बताना आवश्यक समझता हूं कि सन् 1860 ई० में ब्रिटिश सरकार ने भारत स्थित वाइसराय लार्ड कर्निग्टन ने भारत के बौद्ध तीर्थ स्थलों की खुदाई प्रारंभ कराई जिसमें अन्य स्थलों के साथ कुशीनगर में सन् 1876 ई० में भगवान बुद्ध की महापरिनिर्वाण की स्थिति की एक चौबीस फुट की विशाल लेटी हुई मूर्ति प्राप्त हुई थी और तभी से बर्मा के मूल निवासी विद्वान भिक्षु महावीर ने उस मूर्ति पर बौद्ध भिक्षुओं का प्रतीक एवं पवित्र माना जाने वाला वस्त्र "चीवर" चढ़ाया और उस समय से निरन्तर ऐसा होता आया है । भिक्षु महावीर के परिनिर्वाण के पश्चात् बौद्ध संसार के जाने माने विद्वान बौद्ध भिक्षु भदन्त चन्द्रमणि जी महास्थविर ने चीवर चढ़ाने का कार्य पूर्ववत: जारी रखा और वह यह कार्य अपने जीवन भर करते रहे । परिनिर्वाण के बाद उनके शिष्य भदन्त ज्ञानेश्वर यह कार्य अपनी पूर्ण धार्मिक श्रद्धा से करते आ रहे थे परन्तु खेद है कि अभी कुछ दिनों से वहां पुरातत्व विभाग ने भगवान बुद्ध की मूर्ति से चीवर को उतार दिया है और देश विदेश से आने वाले बौद्ध यात्रियों के प्रति उचित शब्दों का प्रयोग एवं आदर नहीं कर रह हैं जिससे समस्त बौद्ध संसार विक्षुब्ध है और उनकी धार्मिक भावना को ठेस पहुंच रही है तथा इसकी बड़ी गलत प्रतिक्रिया हो रही है । श्रीमन, भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है । यहां सभी धर्मों के अनुयायियों को अपने-अपने पावन पवित्र तीर्थ स्थानों पर पूजा एवं वन्दना करने की पूर्ण स्वतंत्रता है फिर बौद्धों के साथ यह भेदभाव क्यों ? मेरा भारत सरकार से अनुरोध है कि इस मामले की तुरन्त जांच कराके आवश्यक कार्यवाही की जाये ।